वर्ष-20

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

परीक्षा के नाम की सील: हायर सेकेण्डरी परीक्षा

1. विषय कोड 4 3 0 परीक्षा का विषय पशुपालन

2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक

3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C या D) अनिवार्यतः भरें

कोड	सेट
U-2052	

केन्द्र क्रमांक की सील

केन्द्रक्रमांक 162005

माध्यमिक शिक्षा मण्डल म.प्र. भोपाल

BOARD OF SECONDARY

1303903

अनुक्रमांक K

परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

2	9	1	6	1	9	2	5	5

दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को ... में शब्दों में लिखा जाए :-

एक	छः	एक	नौ	दो	पाँच	पाँच

पर्यवेक्षक/केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में X अंकों में X

ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 9 (04) में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक)

नाम

पता/संस्था

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

BSEMP

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिका... चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया ... पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समान है एवं योग पूर्णतः सही है।

हस्ताक्षर (परीक्षक)

परीक्षक क्रमांक 992-070

हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक)

दिनांक.................

हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक)

दिनांक.................

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

प्रश्न क्रमांक - 1

(अ) का सही है (ii) उत्तर प्रदेश।

(ब) का सही है (iii) मेरिनो।

(स) का सही है (ii) टिंगरा।

(द) का सही है (i) जीवाणु।

(इ) का सही है (i) पुलोरम।

BSEMP

प्रश्न क्रमांक - 2

कॉलम 'अ'		कॉलम 'ब'
(अ) मोंगरी	-	(iv) मत्स्य
(ब) गुरेज	-	(iii) मुर्रा भेड़
(स) नाविक ज्वर	-	(v) गलघोंटू
(द) विषाणु	-	(ii) न्यूकेसिल्स
(इ) सहकारिता का सिद्धांत	-	(i) समानता

BSEMP

प्रश्न क्रमांक – 3

(i) लंगड़ी रोग से की मृत्युदर 60% प्रतिशत है।

(ii) मेरिनो भेड़ का मूल स्थान स्पेन है।

(iii) मुर्गियों में सफेद रंग के दस्त होना पुलोरम रोग का लक्षण है।

(iv) एक आदर्श कुक्कुटशाला को धरातल भूमि से 2 फुट ऊँचा होना चाहिए।

(v) मादा सूअर का गर्भकाल 114 दिन का होता है।

× × ×

प्रश्न क्रमांक – 4

(i) सन् ~~1966~~ 1965 में

(ii) विषज्वर

(iii) 21 दिन

(iv) 250 तक।

पृष्ठ के अंकों का योग

(v) रोहू मछली का।

प्रश्न क्रमांक - 5

'अथवा'

फिटकरी के उपयोग :— फिटकरी के दो उपयोग निम्न हैं—

(i) बहते हुए खून को रोकने के लिए फिटकरी का उपयोग किया जाता है।

(ii) पशु को उल्टी करवाने के लिए फिटकरी का उपयोग, घाव को धोने के लिए फिटकरी का उपयोग किया जाता है।

नीला थोथा या तूतिया के उपयोग :— तूतिया के दो उपयोग निम्न हैं—

(i) फुटबाथ में 1% तूतिया का उपयोग किया जाता है साँप के काटने पर इसका उपयोग किया जाता है।

(ii) पशुओं के घावों को धोने के लिए 1% तूतिया घोल का उपयोग किया जाता है

BSEMP

कुल अंक

प्रश्न क्रमांक - 6

'अथवा'

'पश्मीना'

उत्तर :- कश्मीरी बकरी के शरीर पर बालों के नीचे सुन्दर, कोमल एवं छोटे-छोटे ऊन की तरह जो बालों की तह पाई जाती है, उसे पश्मीना कहते हैं।

पश्मीना प्रदान करने वाली भेड़ की नस्ल की तीन विशेषताएँ :-

(1) इसकी ऊन से सुन्दर शाल-दुशालें बनाई जाती हैं।
(2) गर्मी को सहन करने की क्षमता होती है।
(3) पहाड़ों पर बोझा ढोने के काम आती है। इसमें 10-12 सेमी. लम्बे होते हैं। इसके सींग ऐंठे हुए होते हैं। इसका रंग चितकबरा होता है।

प्रश्न क्रमांक - 7

खुरपका-मुँहपका रोग का कारक :- सर्वप्रथम इस रोग को वाल्डमैन, ट्रप्कोचिकोव्ही ने सन् 1622 में इसे A प्रकार के वायरस द्वारा फैलने वाला बताया। तथा वाल्डकैली ने सन् 1928 में इसे B प्रकार के वायरस द्वारा फैलने वाला बताया। अमेरिका में एक विशेष A O C द्वारा इस रोग को फैलने वाला बताया दक्षिण अफ्रीका में यह SAT_1, SAT_2, SAT_3 वायरस द्वारा फैलता है।

B S E M P

पृष्ठ योग

लक्षण :- ① पशु को 105°F से 106°F तक तेज बुखार आता है।

② मुँह, जीभ, खुर, पैरों में छाले पड़ जाते हैं।

③ पशु की नाक से स्राव निकलता है।

④ पशु भोजन से दूर खड़ा रहता है।

⑤ पशु के छालों से जो पानी निकलता है उसे इंजेक्शन में भरकर यदि सफेद चूहे को लगाया जाए तो उस पशु की भी मृत्यु हो जाती है इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि पशु को खुरपका-मुँहपका रोग हो गया है।

मृत्यु दर :- 9% पशु इस रोग से मर जाते हैं।

× × ×

प्रश्न क्रमांक - 8 'अथवा'

अच्छा दही बनाने के लिए ध्यान देने योग्य बातें :- अच्छे दही को बनाते समय निम्न लिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए -

(1) दही बनाते समय दही में 0.65-0.75% अम्लीयता होनी चाहिए।

(2) दही बनाने के लिए उसमें ~~आवश्यक~~ शुद्ध दूध, स्वच्छ बर्तनों को प्रयोग में लाना चाहिए।

(3) दही के लिए ताजे व अच्छे गुणों वाला दूध लेना चाहिए।

(4) दही जमाने के लिए अच्छे जामन का प्रयोग करना चाहिए।

(5) दही जमाने के लिए प्रयोग किये गए जामन में दुग्धाम्ल जीवाणु होने चाहिए।

(6) दही सर्दियों में देर से तथा गर्मियों में जल्दी जम जाता है।

(7) दही को सर्दियों में गर्म स्थान पर रखकर ही जमाया जाता है। गर्मियों में आसानी से दही जम जाता है।

(8) गर्मियों में दही 6-8 घंटे में जम जाता है और सर्दियों में 1-2 दिन लग जाते हैं।

BSEMP

प्रश्न क्रमांक - 9 'अथवा'

घी के गुणों को प्रभावित करने वाले कारक :- घी के गुणों को प्रभावित करने वाले व चार कारक निम्न हैं -

(1) दूध की उपलब्धता :- दूध की उपलब्धता भी घी के गुणों को प्रभावित करती है दूध जिस स्थिति में उपलब्ध होता है वैसा ही उसका घी प्राप्त होता है।

पृष्ठ के अंको।

(2) पशु की नस्ल :- पशु की नस्ल भी दूध के गुणों को प्रभावित करती है क्यों कि जिस तरह की पशु की नस्ल होगी वैसा ही पशु दूध देगा और घी गुणों पर प्रभाव पड़ेगा।

(3) पशुओं का आहार :- पशुओं का आहार घी के गुणों को प्रभावित करने वालों में से एक कारण है जैसे आहार (चारा, दाना) पशु वैसा ही दूध देंगे और घी के गुण भी स्वत: ही प्रभावित हो जाएगे।

(4) मौसम :- बर्षातों में पशु पतला दूध देते हैं पतला दूध होने के कारण घी के गुण प्रभावित होते हैं। अत: इस तरह कई प्रकार के कारक घी के गुणों को प्रभावित करते हैं।

×　　　×

प्रश्न क्रमांक - 10

मुर्गियों का आहार का चुनाव करते समय ध्यान देने योग्य बातें :-

मुर्गियों के आहार का चुनाव करते समय हमें निम्न लिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए -

(1) पदार्थ में उपलब्ध पोषक तत्व की प्रतिशत मात्रा :- मुर्गियों के लिए

S E M P

BSEMP

आहार का चुनाव करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जो आहार हम मुर्गियों के लिए दे रहे हैं क्या उसमें पोषक तत्वों की उचित मात्रा उपलब्ध है?

(2) पदार्थ की उपलब्धता :- मुर्गियों के लिए जो आहार हम एकत्रित कर रहे हैं वह सुगमता पूर्वक उपलब्ध हो जाना चाहिए जटिलता से आहार प्राप्त नहीं होना चाहिए।

(3) पदार्थ की कीमत :- मुर्गियों के लिए जो आहार हम चुन रहे हैं वह अधिक खर्चीला नहीं होना चाहिए बल्कि बहुत ही सस्ता होना चाहिए और अच्छा।

(4) पदार्थ की पाचकता :- मुर्गियों के लिए हम जो आहार एकत्रित कर रहे हैं वह मुर्गियों द्वारा आसानी से पचा लिया जाने वाला होना चाहिए।

× ×

प्रश्न क्रमांक - II

अथवा

उत्तम बैल के लक्षण :- उत्तम बैल के नि० लि० लक्षण होने चाहिए -

(i) "छोटी पूँछ छोटे कान
यही बैल की है पहचान।"

(ii) "नीला कंधा, बैंगनी खुरा
कबहुँ न निकले बैल बुरा।"

(1) खड़े कान, चुस्त शरीर :— बैल के कान यदि नीचे तथा शरीर चुस्त है तो वह बैल उत्तम माना जाता है। अतः हमें इसी प्रकार के बैल को चुनना चाहिए।

(2) लम्बी पूँछ, लम्बी गर्दन :— जिस पशु की पूँछ लम्बी होती है तथा चेहरा चौड़ा, गर्दन लम्बी होती है वह बैल उत्तम माना जाता है।

(3) समतल पुट्ठे :— जिस बैल के पुट्ठे समतल होते हैं वह उत्तम बैल माना जाता है।

(4) चमकीली आँखें :— जिस बैल की आँखें चमकीली तथा बड़ी होती हैं वह बैल उत्तम माना जाता है।

(5) मुलायम बाल तथा त्वचा :— जिस बैल के बाल मुलायम तथा त्वचा चिकनी होती है वह बैल उत्तम माना जाता है।

BSEMP

B S E M P

प्रश्न क्रमांक – 12

आइसक्रीम के गुणों को प्रभावित करने वाले कारक :– आइसक्रीम के गुणों को प्रभावित करने वाले कारक नि० लि० है :–

(1) आइसक्रीम मिश्रण का संसाधन :– आइसक्रीम मिश्रण का संसाधन आइसक्रीम के गुणों को प्रभावित करते हैं अत: हमें आइसक्रीम बनाते समय उचित सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

(2) सुवास कर्ता :– आइसक्रीम को प्रमुख रूप से सुवास कर्ता प्रभावित करता है यदि सुवास कर्ता स्वच्छ है तो वह आइसक्रीम अच्छे गुणों वाली बनती है अत: सुवास कर्ता का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

(3) जमाने का ढंग :– आइसक्रीम ठीक प्रकार से रेफ्रिजरेटर में न रखने से आइसक्रीम के गुण प्रभावित होते हैं। इस समय हमें उचित सावधानी बरतनी चाहिए।

(4) स्थायी कारक :– आइसक्रीम प्रयुक्त होने वाले स्थायी कारक जैसे – दुग्ध चूर्ण रंग, मधुर पदार्थ आइसक्रीम के गुणों को प्रभावित

को प्रभावित करता है अतः ये स्थायी कारक जहाँ से लिए जाएँ वे स्रोत स्वच्छ होने चाहिए।

(5) सुवास कारक :— आइसक्रीम में प्रयुक्त होने वाले कारक जैसे - सुगन्ध, गुलाब पंखुड़ियाँ आदि भी आइसक्रीम के गुणों को प्रभावित करते हैं।

× ×

प्रश्न क्रमांक - 13

दुग्ध-चूर्ण बनाने की फुहार शुष्कन विधि :— (1) इस विधि में सर्वप्रथम दुग्ध का मानकीकरण किया जाता है। तब इसे 32.2°C पर 30 मिनिट तक गर्म करते हैं ठोस की अशुद्धियाँ दूर करने के लिए इसे केन्द्रापग शोधक से गुजारा जाता है जहाँ पर इसे 62.8°C अर्थात् 145°F तापमान पर 30 मिनिट तक गर्म करते हैं।

(2) दुग्ध को निर्वात पम्प में 5:1 के अनुपात में संघनित किया जाता है।

(3) संघनित दुग्ध शोषक कक्षों में भेजा जाता है जहाँ अतितीव्र गर्म हवा भेजी जाती है।

(4) गर्म हवा के सम्पर्क में आते ही संघनित दुग्ध पाउडर के रूप में फर्श पर जम जाता है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

(3) इस विधि 99% घुलशीलता वाला दुग्ध चूर्ण प्राप्त होता है।

× × ×

प्रश्न क्रमांक - 14

मुर्गी पालन मे आने वाली बाधाएँ :- मुर्गी पालन में आने वाली बाधाएँ निम्न लिखित हैं -

(1) पूँजी की कमी :- भारतीय किसान निर्धन है उसके पास इतनी पूँजी नहीं है कि वह मुर्गी पालन व्यवसाय प्रारम्भ कर सके साथ ही सरकार द्वारा सहयोग भी नगण्य है।

(2) तकनीकी ज्ञान का अभाव :- हमारे देश में 40% जनसंख्या अभी भी अशिक्षित है और मुर्गीपालन के लिए ~~अधिक~~ तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता होती है इस कारण से मुर्गीपालन व्यवसाय नहीं चल पाता है।

(3) अधिक स्थान की आवश्यकता :- मुर्गी पालन के लिए अधिक स्थान की आवश्यकता होती है जो कि हमारे पास नहीं है अतः स्थान अभाव के कारण मुर्गीपालन व्यवसाय नहीं चल पाता है।

BSEMP

पक्का है

प्रश्न क्रमांक - 15

(4) धार्मिक मान्यताएं :— हमारे देश में हिन्दु धर्म के लोग रहते हैं जो कि अण्डा खाने को मांसाहारी भोजन के अंतर्गत माना जाते हैं तथा वे अण्डा नहीं खाते हैं इस कारण मुर्गी पालन व्यवसाय नहीं चल पाता है।

(5) अण्डे की मांग में भिन्नता :— हमारे देश में लोगों की मान्यताएं हैं कि गर्मियों में अण्डे गर्मी करते हैं इसके कारण वे गर्मी में अण्डे नहीं खाते हैं जिससे गर्मियों में मुर्गी पालन व्यवसाय नहीं चल पाता है।

BSEMP

प्रश्न क्रमांक - 15

1 मुर्गियों के रोगों से बचाव के उपाय :— रोगों से बचाव के निम्न लिखित उपाय हैं —

(1) संतुलित आहार :— पशुओं के लिए हमें संतुलित आहार की व्यवस्था करनी चाहिए क्योंकि

BSEMP

असंतुलित आहार खाने से मुर्गियों में कई प्रकार के रोग लग जाते हैं अतः रोगों से बचाव के लिए संतुलित आहार की व्यवस्था करनी चाहिए।

(2) सूर्य के प्रकाश की उचित व्यवस्था :— कुक्कट शाला में सूर्य के प्रकाश की उचित व्यवस्था करनी चाहिए। सूर्य का प्रकाश न मिलने से चूजों में विटामिन D की कमी हो जाती है तथा नमी बढ़ जाने के कारण रोग फैल जाते हैं अतः रोगों से बचाव के लिए हमें कुक्कुट शाला पर सूर्य के प्रकाश की उचित व्यवस्था करनी चाहिए।

(3) शत्रुओं से सुरक्षा व्यवस्था :— मुर्गी फार्म पर शत्रुओं से सुरक्षा की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।

फार्म के अन्दर समुचित व्यवस्था :— मुर्गियों को रोगों से बचाने के लिए फार्म के अन्दर सभी व्यवस्थाएँ होनी चाहिए। समुचित व्यवस्था न होने के कारण मुर्गियों में रोग लग जाते हैं।

पृष्ठ के अंकों का योग

(5) स्वच्छता की उचित व्यवस्था :— फार्म पर अस्वच्छता रहने के कारण मुर्गियों में कई प्रकार के रोग लग जाते हैं अतः मुर्गियों को रोगों से बचाने के लिए स्वच्छता का पूरा-पूरा

BSEMP

ध्यान रखा जाना चाहिए

× × ×

प्रश्न क्रमांक -16 'अथवा'

आदर्श राशन :— वह राशन जो पशुओं को उसके शरीर भा के अनुसार देने पर सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है, उसे आदर्श राशन कहते हैं।

आदर्श राशन के पाँच गुण :— आदर्श राशन के पाँच गुण निम्न लिखित हैं —

① स्वादिष्टता :— आदर्श राशन स्वादिष्ट हरा-भरा, मुलायम होना चाहिए जिसे पशु रोचकता से खा सके।

② पौष्टिकता :— पशु को ऐसा आहार देना चाहिए जो पौष्टि हो उसमें सभी पोषक तत्व मौजूद हों जिस पशु की वृद्धि हो आदर्श में ये गुण होते हैं।

③ रसीलापन :— पशुओं को आहार में बरसीम, लोबिया, लूसर्न आदि रसीले चारे देना चाहिए जिससे पशु रोचकता से इन्हें खाता है।

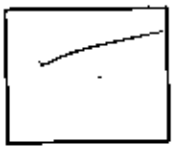

पृष्ठ के अंकों का योग

④ भारीपन :— पशुओं का आहार भारी होना चाहिए क्यों कि पशु को भारी आहार से

योग ५५ ८~

पूर्ण भोजन की पूर्ति होती है आदर्श मे सभी गुण पाये जाते हैं।

स्वच्छ जल :- पशुओं को स्वच्छ जल देने से उसकी वृद्धि भली प्रकार से होती है और वह स्वस्थ, निरोग बना रहता है। अतः पशुओं को स्वच्छ जल देना चाहिए।

B
S
E
M
P

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 19 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

20

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 20 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 21 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

(22)

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 22 के अंक = कुल अंक

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 23 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग